पूर्ण पाठ · निःशुल्क PDF

शिव चालीसा

दोहा · चालीसा · समापन दोहा

Vista Hub · vhoriginal.com
साफ टाइप · प्रिंट के लिए तैयार

कैसे पढ़ें

भक्ति पाठ सहायता

शांत स्थान पर बैठें। दीप या धूप वैकल्पिक है। मन एकाग्र कर महादेव का स्मरण करें।

पहले दोहा, फिर चालीसा की चालीस चौपाई, अंत में समापन दोहा। स्वर स्पष्ट रखें; जल्दबाजी न करें।

सोमवार, प्रदोष, महाशिवरात्रि या सावन की सुबह/संध्या घर की रीति से चुनें। एक बार पूरा पाठ पर्याप्त है; परिवार की परंपरा ७ या ११ बार हो तो उसी से चलें।

श्रद्धा शांत रहे — जबरदस्ती का नियम नहीं।

श्रद्धा नोट

यह **भक्ति पाठ सहायता** है — घर की पूजा-पाठ के लिए स्वयं टाइप किया गया पारंपरिक लोक-पाठ।

आधिकारिक मंदिर प्रकाशन नहीं। किसी प्रकाशक की स्कैन या कॉपी नहीं। तिथि/रीति पंचांग व परिवार से बदल सकती है। चिकित्सा, कानूनी सलाह या फल की गारंटी नहीं। Vista Hub · vhoriginal.com

दोहा

जय गणेश गिरिजा सुवन। मंगल मूल सुजान॥

कहत अयोध्यादास तुम। देहु अभय वरदान॥

चौपाई

1–8

जय गिरिजा पति दीन दयाला। सदा करत सन्तन प्रतिपाला॥

भाल चन्द्रमा सोहत नीके। कानन कुण्डल नागफनी के॥

अंग गौर शिर गंग बहानी। मुण्डमाल तन छवि सोहानी॥

वसन केति मुज दम्भ कीन्हा। छवि को देखि नाग मन दीन्हा॥

मैना मातु कि जय जय कारा। जो जन कीन्हे तुम्हरि सहारा॥

ताको दुःख दूर करि दीन्हा। सुख सम्पत्ति घर में कीन्हा॥

नन्दी गणेश सहित गणराजा। दूत शृंगि भृंगि परित्राजा॥

चरन कमल जन के मन लावै। किंकर जानि दया दृष्टि पावै॥

चौपाई (जारी)

9–16

जो सतसंग करे मन लाई। उनके सब विधि बनै सहाई॥

लम्बोदर गणेश जी कीन्हा। प्रथम पूजा यही तै कीन्हा॥

दुख दारिद्र निकट नहिं आवै। महिमा जानत है संसारा॥

धूप दीप नैवेद्य चढ़ावै। प्रगट देखत अति सुख पावै॥

जहां जन्म हुआ जिस घरी। भाग्य उदय भावी सो करी॥

कर्म प्रधान विश्व करि राखा। जो जस करहि सो तस फल चाखा॥

ध्यान ध्यान जो नर नहिं ध्यावै। जन्म जन्म दुख पावै॥

सुमिरन करत अष्टसिद्धि पावै। नव निधि के सुख सहज में आवै॥

चौपाई (जारी)

17–24

आठ सिद्धि नव निधि के दाता। अस कहत शम्भु कृपानिधाता॥

कामी क्रोधी लोभी कपटी। तिनके संग न बैठहु घाटी॥

सत्संगति से पाप नसावै। सुमिरन से मन निर्मल आवै॥

संकट कटै मिटै सब पीरा। जो यह पाठ करे मन धीरा॥

नित्य निमंत जो गावै। ताके निकट न यम आवै॥

समरथ जानि करो जग पावन। बेद पुराण कहत सब भावन॥

शिव महिमा कोई न जाने। नित प्रति पाठ करत मन माने॥

जोगी जति तपसी ब्रह्मचारी। आरन कुटी में रहत उदासी॥

चौपाई (जारी)

25–32

नाम जपत सुख सम्पत्ति आवै। संशय मिटै आनंद बढ़ावै॥

त्रिपुरारी नीलकंठ महादेव। भवभय हरण करहु सब सेव॥

चन्द्रशेखर गंगाधर स्वामी। मृत्युंजय करुणा अभिरामी॥

भोलेनाथ पशुपति पिनाकी। उमापति हर हर महाशक्ती॥

कैलाशपति शंकर उमाकान्त। भक्तन के रखवारे शान्त॥

जो नर नारी ध्यान लगावें। ताके सब संकट मिट जावें॥

रोग शोक दारिद्र्य नसावें। सुख सम्पत्ति घर में आवें॥

पुत्र पौत्र यश कीर्ति बढ़ै। मनवांछित फल शीघ्र लहै॥

चौपाई (जारी)

33–40

जो यह चालीसा पढ़े पढ़ावै। शिव कृपा दृष्टि तापर आवै॥

सोमवार प्रदोष विशेष। पाठ करे तो मिले अशेष॥

महाशिवरात्रि सावन मासा। पाठ करे पावै सुख आशा॥

बेलपत्र जल चढ़ावै। मन की कामना पूर्ण करावै॥

सत्य वचन दृढ़ विश्वास। पाठ करे तो मिले आश॥

भक्तन की रक्षा करो स्वामी। संकट हरि सुख दे अभिरामी॥

जय जय जय शंकर भवानी। जय महादेव जय कल्याणी॥

जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बन्धन महा सुख होई॥

दोहा

शिव चालीसा जो नर गावै। बसैं वैकुंठ परम पद पावै॥

शिव चरणन चित लाइके। अयोध्यादास गुन गाइ॥

॥ शिव चालीसा समाप्त ॥

यह पाठ स्वयं टाइप किया गया है · भक्ति पाठ सहायता · आधिकारिक मंदिर प्रकाशन नहीं · Vista Hub